ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS: पर्दा–प्रथा, बालविवाह–प्रथा, बहुविवाह–प्रथा, विधवा विवाह, सती–प्रथा, जौहर–प्रथा, दास–प्रथा, देवदासी–प्रथा।

lYrur dky e fL=;k dh lkekftd fLFkfr&,d foopu

Jh b'oj flg

प्रवक्ता इतिहास (अतिथि संकाय) रा0व0मा0वि0, आदमपुर डाढ़ी तहसील व जिला चरखी दादरी (हरियाणा) पिन कोड़ – 127310

प्रस्तावना :–

lkjk'k %&

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य – मध्यकालीन भारत में विशेष रूप से सल्तनत काल में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति एवं सामाजिक जीवन की झलक प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सल्तनतकालीन भारतीय समाज में प्रचलित अनेक सामाजिक कुप्रथाएँ जैसे : पर्दा–प्रथा, बालविवाह–प्रथा, बहुविवाह–प्रथा, विधवा विवाह, सती–प्रथा, शिशुवध, जौहर–प्रथा, दास–प्रथा, देवदासी–प्रथा इत्यादि के बारे में विवरण प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में सल्तनतकालीन भारतीय स्त्रियों के खान–पान, उनकी वेशभूषा, शृंगार प्रसाधन, आभूषणों आदि के बारे में वर्णन किया गया है। शोध–पत्र में मध्यकालीन सामाजिक संस्थाओं के प्राचीनकाल से निरन्तरता की भी सूचना मिलती है व साथ ही भारतीय इस्लामिक संस्कृति के एकीकरण की सूचना भी मिलती है।

भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति सदैव से ही एक समस्या रही है। प्राचीन भारतीय समाज में नारी को 'अर्धांगिनी', 'अर्द्धस्वामिनी' तथा 'सहगामिनी' आदि की उपाधियों से सुशोभित किया जाता था। इस काल में लोपामुद्रा, गार्गी, अपाला, घोषा आदि अनेक वदुषी स्त्रियों के उदाहरण मिलते है जिन्होंने वैदिक मंत्रों की रचना की थी। वैदिक काल में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। स्त्रियाँ धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में भाग लेने के लिए बिल्कुल पूरी तरह से स्वतंत्र होती थी। नारी की स्थिति के बारे में स्मृतिकारों ने भी कहा था कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता निवास करते है – 'यत्र नार्यस्तु पूज्यते तत्र रमन्ते देवता'।

भारतीय विद्वानों एवं आलोचकों ने हमेशा से ही स्त्री को निंदा की दृष्टि से देखा है। महाकवि तुलसीदास ने स्त्री के विषय में यह चौपाई कही है – ''ढ़ोल, गंवार, शुद्र, पशु, नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी''। इसी प्रकार कबीर ने भी कहा है – ''एक कनक एक कामिनी, दुर्गम घाटी दोय।'' ए.एस. अल्टेकर के शब्दों में, ''समय के साथ–साथ समाज में नारियों का महत्व कम होता गया।'' बौद्ध काल में स्त्रियों की दशा में पतन होना प्रारंभ हो गया था। सल्तनत काल तक स्त्रियों की स्थिति काफी दयनीय हो गई थी। काम पिपासु तुर्क आक्रमणकारियों ने स्त्रियों को केवल एक मनोरंजन के साधन के रूप में स्वीकार किया। इस प्रकार से सल्तनतकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति काफी कमजोर हो गई।

ink&iFkk %&

पर्दा एक इस्लामी शब्द है, जो फारसी से अरबी भाषा में आया था। इसका अर्थ होता है ''ठकना'' या ''अलग करना''। पर्दा–प्रथा भारतीय समाज में प्रचलित एक सामाजिक कुप्रथा है जिसने स्त्रियों को काफी प्रभावित किया है। भारत में पर्दा–प्रथा की शुरूआत किस प्रकार से हुई, इस बारे में विद्वानों में काफी मतभेद हैं। मिस कपूर के अनुसार पर्दा–प्रथा का प्रारंभ मुसलमानों ने किया था। डॉ. अल्टेकर का मत है कि भारतीय पर्दा–प्रथा से अपरिचित थे। डॉ. वाहिद मिर्जा के अनुसार पर्दा–प्रथा हिन्दुओं में प्रचलित थी, उनका मानना है कि मुस्लिम समाज में पर्दा–प्रथा की शुरुआत राजपूती समाज के प्रभाव के कारण हुई। डॉ. आशीर्वाद लाल श्रीवास्तव डॉ. मिर्जा के कथन से असहमत हैं, क्योंकि मस्लिम आक्रमणों से पहले राजपूत समाज में पर्दा–प्रथा का कहीं भी उल्लेख नहीं मिलता। इसके विपरीत इस प्रकार के दृष्टांत अवश्य मिलते हैं कि चौदहवीं शताब्दी में राजपूत स्त्रियों ने आवश्यकता पड़ने पर युद्धों में भाग लिया।1 प्राचीन भारतीय समाज में पर्दा–प्रथा का प्रचलन आंशिक रूप में था। पर्दे का आधुनिक तथा संस्थागत रूप मुस्लिम शासन के समय से प्रारंभ होता है। तुर्क शासक और उनके पदाधिकारी रूपवती हिन्दु स्त्रियों के साथ अपमानजनक व्यवहार करते थे। अतः शासक वर्ग और अमीर वर्ग के लोगों से अपनी रक्षा करने के लिए पर्दे का प्रचलन हुआ था। सल्तनतकालीन भारतीय समाज में बहुसंख्यक ग्रामीण महिलाएँ किसी भी प्रकार का बना हुआ पर्दा नहीं पहनती थी। कोई भी अजनबी जब उनके पास से गुजरता था तो केवल साड़ी का एक पल्ला ही उनके मुख और सिर को ठकने के लिए पर्याप्त होता था। पर्दा–प्रथा का प्रचलन पूर्ण रूप से हिंदु तथा मुस्लिमों के उच्च वर्गों की महिलाओं में था क्योंकि पर्दा उनके खानदान के लिए गौरव तथा सम्मान की वस्तु माना जाता था। घुँघट–प्रथा का प्रचलन हिंदुओं तथा निम्न श्रेणी की मुस्लिम स्त्रियों में था। विद्यापति तथा जायसी के अनुसार बंगाल और उत्तर प्रदेश में हिन्दु स्त्रियाँ पर्दा करती थी।2 प्रथम मुस्लिम शासिका रजिया सुल्तान ने पर्दे की प्रथा को त्याग दिया था जिसके कारण मुसलमान अमीर उनसे नाराज हो गए और अंत में उसे अपनी जान भी गँवानी पड़ी। फिरोजशाह तुगलक सल्तनत का प्रथम सुल्तान था जिसने मुस्लिम स्त्रियों के लिए पर्दा करना अनिवार्य कर दिया था और मुस्लिम महिलाओं का सुफी संतों की दरगाहों पर जाना प्रतिबंधित कर दिया था।3 अमीर घरानों की स्त्रियाँ डोली एवं पालकी में बैठकर बाहर निकलती थी। मुस्लिम स्त्रियाँ हिंदु स्त्रियों की तुलना में अपने शरीर को ठकने का अधिक ध्यान रखती थी।

fookg %&

विवाह एक प्राचीन संस्कार है। सल्तनतकालीन भारतीय समाज में महिलाओं को भोग–विलास की वस्तु समझा जाता था जिसके कारण समाज में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का सम्मान कम होता था। मुसलमानों के पवित्र ग्रंथ कुरान शरीफ के अनुसार एक मुसलमान को चार पत्नियाँ रखने की आज्ञा थी, परंतु मुस्लिम अमीर वर्ग के लोग अनेक स्त्रियों से विवाह करते थे। उनके हरम औरतों से भरे रहते थे।4 कभी–कभी घर में जब रूपवती दासी आ जाती थी तो उसे गृहस्वामिनी की तुलना में अधिक महत्व दिया जाता था। रजिया सुल्तान की उपमाता 'शाह तुर्कान' पहले एक दासी थी जो बाद में अपनी सुंदरता के कारण चेरी रानी बन गई थी। सल्तनत काल में केवल नसिरूद्दीन महमूद ही एक ऐसा सुल्तान था जिसने केवल एक विवाह किया था। सल्तनतकालीन ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर ग्रामीण एक ही विवाह करते थे। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के लोग एक से अधिक पत्नियों का खर्च वहन नहीं कर सकते थे।5

cky fookg %&

सल्तनतकालीन भारतीय समाज में विवाह की कोई उम्र नहीं थी। सुल्तान और अमीर वर्ग के लोगों के अत्याचारों के कारण हिंदुओं में बाल विवाह का प्रचलन प्रारंभ हो गया। हिंदु अपनी कन्याओं की शादी 7 से 13 वर्ष की आयु में ही कर देते थे। हिंदु अपनी ही उपजाति में विवाह कर सकते थे। बशर्ते की वह जाति उससे ऊँची हो। मुसलमानों में जाति का कोई बंधन नहीं था। मुसलमान अपने सगे भाई–बहिन के अलावा अन्य सभी से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर सकते थे। खिज्र खाँ और देवलरानी का विवाह 10 और 8 वर्ष की आयु में हुआ था।6

fo/kok fookg %&

मुसलमानों में विधवा विवाह का प्रचलन था। मुस्लिम समाज में विधवा अपने पति की सम्पति पर तब तक अधिकार रख सकती थी जब तक कि उसके दहेज की रकम की अदायगी न हो जाए।

हिंदुओं में विधवाओं को पुनर्विवाह करने का अधिकार नहीं था। हिंदु विधवा महिलाओं की स्थिति समाज में अत्यंत दयनीय थी। उन्हें समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता था। हिंदु विधवा स्त्रियों को न तो सौंदर्य प्रसाधन और न ही रंगीन वस्त्र धारण करने की अनुमति थी। अलबिरूनी के अनुसार, ''विधवा का एकमात्र विकल्प सती होना था। विधवा होना पाप समझा जाता था।'' डेलाबेला के शब्दों में, ''विधवा पुनर्विवाह नहीं कर सकती थी तथा अपने सिर के बाल कटवाकर एकान्तवास करती थी।''7

lrh iFkk %&

जब कोई भी स्त्री अपने पति की मृत्यु हो जाने के उपरांत उसके शव के साथ जीवित ही चिता में जलकर अपने प्राणों को त्याग देती थी, वह प्रथा सती–प्रथा के नाम से जानी जाती थी। इस प्रथा का प्रचलन हमारे देश में प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। सल्तनतकालीन भारतीय समाज में भी यह प्रथा प्रचलन में थी। भारत में सती–प्रथा का पहला अभिलेखीय साक्ष्य 510 ई0 एरण अभिलेख में मिलता है। सल्तनतकाल में इस प्रथा का सबसे ज्यादा प्रचलन भारतीय समाज में राजपूत जाति में था।

समाज के अन्य उच्च वर्ग के लोगों में भी यह प्रथा विद्यमान थी। अलबिरुनी के अनुसार विधवा स्त्री के सामने केवल दो मार्ग होते थे। प्रथम वह जीवन भर दुख तथा अपमानपूर्ण जीवन व्यतीत करें दूसरे, वह सती हो जाए। अधिकतर स्त्रियाँ दूसरा मार्ग ही अपनाती थी। पर्यटक निकालो कोन्टी (सन् 1520) के अनुसार, यदि कोई विधवा सती नहीं होती थी तो उसे पति की सम्पति से वंचित कर दिया जाता था। यहाँ तक कि उसके बच्चे तक सम्पति के भागीदार नहीं बन सकते थे।8

tkgj&iFkk %&

यह प्रथा हिंदु समाज में विशेष रूप से राजपूतों में प्रचलित थी। राजपूत महिलाओं को जब यह आशा नहीं रहती थी कि उनके पतियों की लड़ाई में विजय प्राप्त नहीं होगी तो वे अपने सतीत्व की रक्षा के लिए अग्नि जलाकर अपने प्राणों की बलि दे देती थी। यही 'जौहर' कहलाता था। यह इस कारण किया जाता था कि कहीं पराजित होने पर वे शत्रुपक्ष के हाथ में न पड़ जायें। सल्तनत काल में जौहर के अनेक उदाहरण मिलते है। रणथम्भौर के शासक राणा हम्मीर देव को अलाऊद्दीन खिलजी के हाथों अपनी पराजय निकट दिखाई देने लगी तो उसने जौहर करवाया। दिल्ली सुल्तान मुहम्मद तुगलक ने जब काम्पिला के राज्य पर आक्रमण किया तो काम्पिला के राजा ने बहाऊद्दीन गुरस्प को पहले सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। इसके बाद उसने जौहर

करवाया।9 इब्नबबूता लिखता है कि स्त्रियों ने स्नान के बाद अपने शरीर पर चंदन का लेप लगाया तथा अग्नि में भस्म हो गई। इसके पश्चात राजा तथा उसके सैनिक हथियार लेकर शत्रु पर टूट पड़े और लड़ते–लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए।

nkl & iFkk %&

सल्तनत काल में दास–प्रथा का भी प्रचलन था। इब्नबतूता के अनुसार राज्य द्वारा बहुत सी दासियों की व्यवस्था की जाती थी जिनको राज्य की तरफ से दूसरे देशों के शासकों को भेंट स्वरूप भेजा जाता था। मुहम्मद तुगलक ने 100 दासियों को जो नृत्य और संगीत में निपुण थी उनको उपहारस्वरूप चीन के सम्राट को भेंट किया था।10 डॉ. घोषाल के अनुसार मुसलमानों को हिंदु स्त्रियों को ज्यादा से ज्यादा दास बनाने में अत्यधिक प्रसन्नता होती थी। कभी–कभी इन दासियों को जिनमें हिंदु राजकुमारियाँ भी होती थी, दरबार में और अमीरों की महफिल में नाचने–गाने के लिए बाध्य किया जाता था।11

L=h f'k{kk %&

सल्तनत काल में स्त्री शिक्षा प्रचलन में थी। लड़कियों के लिए अलग से स्कूल नहीं होते थे। लड़के और लड़कियाँ दोनों ही स्कूल में शिक्षा ग्रहण करते थे। हिंदुओं में उच्च वर्ग की स्त्रियों की शिक्षा की और विशेष ध्यान दिया जाता था। उच्च वर्ग की हिंदु स्त्रियाँ साहित्य, दर्शन, धर्म और तर्कशास्त्र के अतिरिक्त संगीत एवं नृत्य की शिक्षा ग्रहण करती थी। इस काल में अवन्ती सुंदरी, देवलरानी, रूपमति, पद्मावती, रूकमणि और मीराबाई सभ्य, शिक्षित तथा सुसंस्कृत नारियाँ थी।12 मीराबाई कृष्ण मार्गी कवयित्री थी जिसने कृष्ण भक्ति से सम्बन्धित अनेक पदों की रचना की थी। उनमें से कुछ पद आज भी गुजरात और राजस्थान में जनसाधारण की जुबान पर रखे हुए है। हिंदुओं की भाँति मुसलमानों में भी उच्च वर्ग की स्त्रियों की शिक्षा के लिए विशेष रूप से प्रबंध किया जाता था। इल्तुतमिश की बेटी रजिया अरबी और फारसी को पढ़ने–लिखने और बोलने में पूरी तरह से निपुण थी। इल्तुतमिश की पत्नी शाहतुर्कान और जमालुद्दीन खिलजी की पत्नी मलका–ए–जहाँ राज्य प्रशासन कार्य में दक्ष थी।13

Hkkstu %&

इस काल में हिंदु और मुसलमान दोनों का भोजन एक ही प्रकार का होता था। दक्षिण भारत में चावल प्रमुख भोजन था। गुजराती दही और चावल प्रमुख रूप से खाते थे। मुसलमान स्त्रियाँ और हिंदुओं में राजपूत स्त्रियाँ मासाँहारी भोजन करती थी। उच्च वर्ग की स्त्रियों के भोजन में मांस, घी, दूध, दही, फल, मेवे और मिठाई होती थी। गरीब वर्ग के लोगों का मुख्य भोजन खिचड़ी होता था जिसे वे दही के साथ खाते थे। खिचड़ी दाल और चावल को मिलाकर तैयार की जाती थी। भोजन परोसते समय चावल पहले परोसा जाता था और बाद में खिचड़ी परोसी जाती थी।14 अमीर खुसरो के अनुसार भोजन में चने और मूंग की दालों का भी प्रयोग किया जाता था। दालों के साथ–साथ मछलियों का भी प्रमुख भोजन होता था। जायसी ने विभिन्न प्रकार की मछलियों, परहिन, झींगा, सींगी इत्यादि का वर्णन किया है।15 मुसलमानों के भोजन में मांस का प्रयोग होता था। मांस, भेड़, बकरी–कबूतर, मुर्गे का होता था।16 भोजन में घिया, तौरी, परमल और अरबी का भी प्रयोग होता था।

oL=] Ükxkj izlk/ku ,oa vkHk"k.k %&

इस काल में स्त्रियाँ साधारण वस्त्र पहनती थी। गरीब वर्ग की स्त्रियाँ साड़ी भी पहनती थी। जिसके एक पल्ले से उनका सिर ढँका रहता था। दक्षिण भारत में स्त्रियाँ अपने सिर पर कोई भी वस्त्र धारण नहीं करती थी। उड़ीसा में गरीब महिलाएँ वस्त्रों के अभाव में पेड़ों की पत्तियों से अपने शरीर को ढ़कती थी।17

समाज में सभी वर्गों की स्त्रियाँ अगियाँ और जाकेट भी पहनती थी। दोआब में स्त्रियाँ लहंगा, चौली और अगियाँ भी पहनती थी। मुस्लिम स्त्रियाँ पायजामा और कुर्ता धारण करती थी। इनका पायजामा चाँदी अथवा रेशम के नाड़े से बँधा हुआ रहता था। सलवार सुती और रेशमी वस्त्रों की बनी होती थी। अमीर वर्ग की महिलाएँ मुख्य रूप से कश्मीरी शॉल और करबा ही पहनती थी। मुस्लिम स्त्रियाँ घर से बाहर निकलने पर काले वस्त्र के बुर्के का प्रयोग करती थी।18

सल्तनत काल में स्त्रियाँ अपने शारीरिक सौंदर्य को बढ़ाने के लिए अनेक प्रकार के श्रृंगार प्रसाधनों का प्रयोग करती थी। स्त्रियाँ अपने शरीर को स्वच्छ रखने के लिए नियमित रूप से स्नान करती थी। सिर धोने के लिए स्त्रियाँ मुल्तानी मिट्टी का प्रयोग करती थी। स्नान करने के बाद सिर पर तिल का तेल लगाया जाता था।19 सम्पन्न परिवारों की स्त्रियाँ अपने शरीर पर कस्तूरी और चंदन का लेप करती थी। बालों में सुगन्धित तेल का प्रयोग किया जाता था। स्त्रियाँ माथे पर बिंदी भी लगाती थी। स्त्रियाँ माँग में सिंदुर और आँखों में सूरमा का प्रयोग करती थी। हाथ तथा पैरों को रंगने के लिए स्त्रियाँ मेहंदी काम में लेती थी। स्त्रियों में आभूषण पहनने का बड़ा शोक था। स्त्रियाँ अपने शरीर के विभिन्न अंगों के लिए अलग–अलग प्रकार के आभूषणों को पहनती थी जैसे – शीशफूल, कर्णफूल, चम्पाकली, पंचलड़ी, सतलड़ी, नथ, बेसर, लौंग, हार, बाजुबंद, कंगन, कड़ा, चुड़ी, कमरधनी, पाजेब, बिछुआ इत्यादि।

euksjatu dk lk/ku %&

सल्तनत काल में हिंदु तथा मुस्लिम स्त्रियाँ अनेक प्रकार से अपना मनोरंजन करती थी। हिंदु स्त्रियाँ बसंत, रक्षाबंधन, होली, दीपावली, शिवरात्रि का तयौहार बड़ी धूमधाम से मनाकर अपना मनोरंजन करती थी। मुहम्मद तुगलक सत्लनत का प्रथम सुल्तान था जिसने हिंदुओं के प्रसिद्ध त्यौहार होली में भाग लिया था। मुस्लिम स्त्रियाँ भी ईद, मोहरम, नौरोज, शब्बेरात इत्यादि के त्यौहार मानकर अपना मनोरंजन करती थी। त्यौहारों के अतिरिक्त स्त्रियाँ नृत्य, संगीत, नाटक के द्वारा और द्वंद्व युद्ध, पशु–पक्षियों के युद्ध को देखकर भी मनोरंजन किया करती थी। अमीर खुसरों के अनुसार शतरंज एक लोकप्रिय खेल था और महिलाएँ भी शतरंज खेलती थी।20

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सल्तनतकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति अत्यंत असंतोषजनक थी। मुस्लिम स्त्रियों की अपेक्षा हिंदु स्त्रियों की दशा और भी अधिक दयनीय थी। सल्तनत काल में प्रचलित अनेक सामाजिक कुप्रथाएँ जैसे :– बाल विवाह, पर्दा–प्रथा, सती–प्रथा, जौहर–प्रथा, दास–प्रथा, देवदासी–प्रथा इत्यादि के कारण हिंदु स्त्रियों की उन्नति का मार्ग अवरूद्ध हो गया था जिससे समाज में उनका सम्मान पुरुषों की तुलना में कम हो गया था। हिंदुओं की भाँति मुस्लिम समाज में व्याप्त सामाजिक कुप्रथाएँ पर्दा–प्रथा, बहु विवाह–प्रथा से मुस्लिम स्त्रियों के मान–सम्मान में काफी कमी आई। इस काल में स्त्रियों को पुरुषों के भोग–विलास की वस्तु समझा जाता था। स्त्रियों को घर की चार दीवारी में अधिकतर समय व्यतीत करना पड़ता था। पति की सेवा करना ही उनके जीवन को प्रमुख उद्देश्य माना जाता था। इस प्रकार से सल्तनतकालीन समाज में स्त्रियों की दशा शोचनीय थी।

lanHkZ lwph

1. मध्यकालीन भारतीय संस्कृति, पृ. 23
2. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 68, जयपुर–2004
3. प्रो. (डॉ.) तातेड़ सोहनराज, डॉ. अहमद शाहिद सल्तनतकालीन इतिहास एवं संस्कृति, पृ. सं. 73, जयपुर–2014
4. डॉ. नागोरी एस.एल., श्रीमती नागोरी कान्ता मध्यकालीन भारत का स ा म ा ि ज क , सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं. 52, जयपुर–2007
5. प्रो. (डॉ.) तातेड़ सोहनराज, डॉ. अहमद शाहिद सल्तनतकालीन इतिहास एवं संस्कृति, पृ. सं. 74, जयपुर–2014
6. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 68, जयपुर–2004
7. डॉ. नागोरी एस.एल., श्रीमती नागोरी कान्ता मध्यकालीन भारत का स ा म ा ि ज क , सांस्कृतिक एवं आर्थिक इतिहास, पृ. सं. 52, जयपुर–2007
8. चौधरी सुजाता, शर्मा ब्रह्मदत, माथुर गणेशचन्द्र मध्यकालीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का इतिहास, पृ.सं. 71, बीकानेर–1976–77
9. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 71, जयपुर–2004
10. प्रो. (डॉ.) तातेड़ सोहनराज, डॉ. अहमद शाहिद सल्तनतकालीन इतिहास एवं संस्कृति, पृ. सं. 78, जयपुर–2014
11. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 71, जयपुर–2004
12. प्रो. (डॉ.) तातेड़ सोहनराज, डॉ. अहमद शाहिद सल्तनतकालीन इतिहास एवं संस्कृति, पृ. सं. 77, जयपुर–2014
13. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 72, जयपुर–2004
14. जायसी, पद्मावत, पृ. सं. 174
15. वही, पृ.सं. 312
16. बर्नी, पृ. 116
17. गुप्त, आर.के., मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला, पृ. सं. 46, जयपुर–2004
18. वही, पृ.सं. 46
19. डॉ. सिंह ओमप्रकाश, मध्यकालीन भारत का राजनीतिक, सामाजिक, सां स्कृ ति क एवं आर्थिक इतिहास (750 से 1761ई0 तक), पृ. सं. 119, इलाहाबाद–2001
20. वही, पृ. सं., 122